नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उत्तरी दिल्ली)

दिनांक 16.11.2023 को सम्पन्न समिति की 10वीं बैठक का कार्यवृत्त

समिति की 10वीं बैठक नराकास (उत्तरी दिल्ली) के अध्यक्ष डॉ. त्रिलोचन माहपात्र की अध्यक्षता में दिनांक 16.11.2023 को ए. पी. शिंडे सभागार, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। बैठक की तिथि पर कुल सदस्य कार्यालयों की संख्या 70 है। बैठक में कुल 95 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

बैठक का आरंभ श्री उमाकान्त दुबे, सदस्य सचिव, नगर (राजभाषा) कार्यान्वयन समिति (नराकास) (उत्तरी दिल्ली)/ उप-पंजीकार, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने बैठक में उपस्थित मुख्य अथिति सहित समस्त अथितियों का स्वागत पुष्पगुछ से किया व बैठक में उपस्थित समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों का भी स्वागत किया गया। श्री उमाकान्त दुबे ने नराकास (उत्तरी दिल्ली) के समस्त कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्ट की समीक्षा के लिए श्री सुरेश पाल, प्रभारी (राजभाषा) एवं मुख्य तकनीकी अधिकारी को मंच पर आमंत्रित किया।

श्री सुरेश पाल, प्रभारी (राजभाषा) एवं मुख्य तकनीकी अधिकारी ने बैठक में उपस्थित नराकास (उत्तरी दिल्ली) के समस्त कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्ट की समीक्षा का व्याख्यान किया और समस्त कार्यालय को उनके द्वारा किए जा रहे हिंदी कार्यो का विवरण एवं प्रतिशत प्रस्तुति द्वारा बताया, जिससे समस्त कार्यालयों को अधिक से अधिक हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित भी किया और जिन कार्यालयों को सुधार के लिए आवश्यक जानकारी दी गयी जिससे हिंदी में कार्य अधिक से अधिक किए जा सके।

श्री कुमार पाल, उप-निदेशक, राजभाषा विभाग ने डॉ त्रिलोचन माहपात्र, अध्यक्ष, नराकास (उत्तरी दिल्ली) एवं पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण और मंच पर उपस्थित समस्त अधिकारियों का स्वागत किया। नराकास (उत्तरी दिल्ली) की पिछली बैठक दिनांक 11.11.2019 को की गई थी परंतु तत्पश्चात कोरोना काल के पश्चात बैठक का आयोजन किया गया। श्री कुमार पाल ने कहा कि दैनिक कार्यो में अधिक से अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग करने के लिए बल दिया और सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का हिंदी भाषा में अपना अधिक योगदान देने के लिए जोर दिया। श्री कुमार पाल, उप-निदेशक, राजभाषा

विभाग ने हिंदी में प्रशिक्षण प्रयोग और प्रोत्साहन पर बल दिया और कलम, कंठ व कम्प्यूटर उपयोग पर भी जोर दिया।

श्रीमती गरिमा श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव ने श्री कुमार पाल, उप-निदेशक द्वारा सुझाए गए सुझावों की प्रशंसा करते हुए हिंदी भाषा के महत्व के बारे में अपने विचार व्यक्त किए और हिंदी भाषा का अधिक उपयोग करने की सलाह दी। श्रीमती गरिमा श्रीवास्तव ने बताया कि और राजभाषा एवं संपर्क मनोरंजन भाषा के रूप में विकास हुआ। हर भाषा संस्कृत भाषा से मिलती है 'क' क्षेत्र में शतप्रतिशत हिंदी भाषा का प्रयोग करें। अंग्रेजी भाषा में नोटिंग होने पर जिम्मेदारी राजभाषा विभाग की बहुत बढ़ जाती है। हिंदी में बहुत अधिक काम हुआ है संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी प्रयोग होने लगा है जो कि बहुत बड़ा परिवर्तन है। आप अपनी भाषा में बोल सकते है। अंग्रेजी भाषा नहीं आना पहले शर्म की बात होती थी अब नहीं श्रीमती गरिमा श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी भाषा में ज्यादा से ज़्यादा काम करे।

डॉ. डी. के. अग्रवाल, महापंजीकार, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण ने कहा कि हमें हिंदी भाषा का उपयोग कार्यालय में ही नही बल्कि दैनिक जीवन में भी करना चाहिए। डॉ. डी. के. अग्रवाल, महापंजीकार ने कहा कि सभी बैठकें समय से हो और राजभाषा के आर्टिकल 343 के बारे में बात की संवैधानिक कार्यों के दातिव्य के अतिरिक्त जो सूची है वह उसे पूर्णतया पूर्ण करना है दैनिक जीवन में पूर्ण करें। आपका कार्यालय आपको रोल मॉडल के रूप में प्रयोग करता है। अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने पर विद्वान हो ऐसा नहीं है। हिंदी के शब्द संस्कृत या दूसरी भाषा से है। हिंदी का प्रयोग करते हैं तो ऐसा नहीं है कि आप कमतर है। हिंदी को कार्यालय के अलावा आगे आये तथा प्रयोग करें। विज्ञान का उतना आधार नहीं हैं वैज्ञानिक शब्दावली के आधार हिंदी को लगातार बढ़ावा दें। प्रशिक्षण व प्रोत्साहन में यदि कमी है तो प्रयोग में लाए, प्रयोग मुश्किल नहीं है अगरकिसी भी भाषा के 200 शब्दो का ज्ञान हैं तो भाषा का ज्ञान हैं। बॉलीवुड के चलते बहुत सारे शब्द हिंदी में शामिल हो गए हैं।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, अध्यक्ष, नराकास (उत्तरी दिल्ली) एवं पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण ने बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों / कर्मचारियों का स्वागत किया और कहा कि जिन कार्यलयों में अभी सुधार की आवश्यकताएं हैं, वह अपना प्रयास जारी रखें और सुधार करें। डॉ त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि कुछ प्रांतीय भाषा विलुप्त होने जा रही हैं। यह भी एक चिंता का विषय है। शास्त्रीय भाषा जैसे तमिल, तेलगू, मलयालम,

कन्नड़, उड़िया इत्यादि शास्त्रीय भाषा हैं जिसमे पुराना साहित्य हैं। सबसे पुरातन भाषा: संस्कृत हैं, तमिल भी उतनी पुरानी भाषा मानी जाती है लेकिन भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिंदी हैं। हमारे कामकाज में ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग होना चाहिए।

उन्होंने बताया कि समीक्षा संक्षिप्त हों और द्विभाषी होना चाहिए। रिपोर्ट समय पर भेजी जानी चाहिए। 14 संस्थान रिपोर्ट जमा नहीं किया हैं ये सारे संस्थानों को पत्र प्रेषित किया जायेगा।

नराकास बैठक दो बार सालाना अवश्य हों। अगली बैठक मार्च या मार्च से पहले अवश्य पूर्ण होगा।

कार्यालय पत्राचार 'क' 'ख' 'ग' क्षेत्र में नियमानुसार पत्राचार करें तथा सम्बंधित को प्रशिक्षण व सुधार का मौका दिया जाना चाहिए।

खुली चर्चा के दौरान कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिंदी में अपने संदेह दूर करने के लिए मंच पर उपस्थित अधिकारियों से अपने सुझाव व्यक्त किए।

तत्पश्चात बैठक औपचारिक धन्यवाद एवं राष्ट्रगान के साथ संपन्न हुई।

*****